OM 6 final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:05 AM Page 8

कथा सरिता

दांत और जीभ

हिमालय की गुफा में एक संत महात्मा रहते थे। महात्मा जी का आखिरी समय था। उनके अनेक शिष्य थे। वे सभी शिष्य उनके पास एकत्रित हो गए और उन्होंने एक प्रार्थना की कि आप प्राण त्यागने से पूर्व हमें अंतिम सीख के रूप में कुछ प्रदान करें।

शिष्यों की बात सुनकर महात्मा जी ने अपने करीब उपस्थित प्रिय शिष्यों से एक प्रश्न किया - 'मेरे मुंह में तुम लोगों को क्या दिखाई देता है?'

शिष्यों में से एक बोला - 'गुरुवर! आपके मुंह में केवल जीभ है, दांत तो सभी गिर चुके हैं।'

महात्मा जी ने कहा - 'क्या तुम लोग मुझे यह बता सकते हो कि मेरे दांत पहले ही गिर चुके, जबकि जीभ ज्यों-की-त्यों विद्यमान है। मेरे मुंह में जीभ पहले आई है और दांत बाद में। फिर दांत जो बाद में आए वे तो चले गए और जीभ सही-सलामत क्यों है?'

शिष्यों की समझ से बाहर की बात थी। सब के सब शिष्य आपस में एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। किसी को गुरु के प्रश्न का समुचित उत्तर सूझ नहीं रहा था। सभी बस मौन खड़े थे। तभी महात्मा जी ने कहा - 'शिष्यों! देखो, मेरे दांत कठोर थे, अत: कभी के गिर गए, किन्तु जीभ में कठोरता नहीं, कोमलता थी। अत: वह अब तक ज्यों-की-त्यों है। मेरी तुम सभी को अंतिम सीख यही है कि तुम अपना व्यवहार यदि हमेशा अपनी जीभ के अनुसार कोमल बनाकर चलोगे तो सर्वत्र स्नेह और सम्मान प्राप्त करते हुए टिक सकोगे अन्यथा दांतों के समान कठोर रहकर हर आदमी की निगाह से गिर जाओगे।'

पुरानी नाक

एक गरीब मनुष्य ने देवता से वर प्राप्त किया था। देवता संतुष्ट होकर बोले, तुम ये पासा लो। इस पासे को जिन किन्हीं तीन कामनाओं से तीन बार फेंकोगे वे तीनों पूरी हो जाएंगी। वह आनंदोल्लासित हो घर जाकर अपनी पत्नी के साथ परामर्श करने लगा कि क्या वर मांगना चाहिए। स्त्री ने कहा कि धन दौलत मांगो किंतु पति ने कहा देखो हम दोनों की नाक चपटी है, उसे देखकर लोग हमारी बड़ी हंसी करते हैं। अत: प्रथम बार पासा फेंक कर सुंदर नाक की कामना करनी चाहिए। किंतु स्त्री का मत वैसा नहीं था। अंत में दोनों में खूब तर्क प्रारम्भ हुआ। आखिर पति ने क्रोध में आकर यह कहकर पासा फेंक दिया– हमें सुंदर नाक मिले, सुंदर नाक मिले, सुंदर नाक मिले। आश्चर्य! जैसे ही उसने पासा फेंका वैसे ही उसके शरीर में तीन नाकें उत्पन्न हो गईं। तब उसने देखा यह तो विपत्ति आ पड़ी। फिर उसने दूसरी बारी पासा फेंक कर कहा नाक चली जाएं। इस बार सभी नाकें चली गईं। साथ ही अपनी नाक भी चली गई। अब शेष रहा एक वर, तब उन्होंने सोचा यदि इस बार पासा फेंक कर चपटी नाक के बदले सुंदर नाक प्राप्त करें तो लोग अवश्य ही चपटी नाक के स्थान पर अच्छी नाक देख कर उसके बारे में पूछताछ करेंगे। फिर तो हमें सभी बातें बतानी पड़ेंगी। तब वे हमें मूर्ख समझकर हमारी और भी हंसी उड़ाएंगे। कहेंगे कि ये लोग ऐसे तीन वरों को प्राप्त करके भी अपनी अवस्था की उन्नति नहीं कर सके। यह सोच कर उन्होंने पासा फेंक कर अपनी पुरानी चपटी नाक ही मांग ली। ठीक ही है समझबूझ कर काम न करने वाले लोग अवसरों को अपने हाथ से यूं ही गंवा देते हैं। उनका लाभ नहीं उठा पाते।

असली शांति

एक राजा ने घोषणा की कि शांति का सबसे अच्छा चित्र बनाने वाले चित्रकार को पुरस्कृत किया जाएगा। इस प्रतियोगिता के लिए हज़ारों चित्रकारों ने अपने चित्र भेजे, पर राजा को उनमें से दो ही पसंद आए। पहला चित्र एक शांत झील का था। झील हरे-भरे पहाड़ों से घिरी थी और नीले आसमान में रुई के फाहे की तरह बादल तैर रहे थे। पानी में तैरते हंस खूबसूरत लग रहे थे। पहली नज़र में ही कोई भी कह सकता था कि इससे शांत जगह हो ही नहीं सकती। वहीं दूसरे चित्र में पहाड़ थे, लेकिन मटमैले और ऊबड़-खाबड़। घने बादल छाए हुए थे, बादलों के बीच बिजली की कड़क दिखाई दे रही थी और बारिश हो रही थी। पहाड़ों से होकर एक गरजता जलप्रपात भी नज़र आ रहा था। चित्र को और करीब से देखा गया, तो उसमें गरजते जलप्रपात के समीप एक चट्टान की दरार में उगा छोटा पेड़ दिखाई दिया। उसकी एक टहनी में एक चिड़िया ने घोसला बनाया हुआ था। चारो तरफ पानी ही पानी था, लेकिन वह चिड़िया घोसले में अपने बच्चों के साथ शांति से बैठी हुई थी। यह सब देखने के बाद राजा के होठों पर मुस्कान खिल गई। उन्होंने दूसरे चित्र को सर्वश्रेष्ठ घोषित कर दिया।

निष्ठा का सबक

पंडित मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना दान से एकत्रित राशि से की थी। असंख्य लोगों के पास पंडितजी दान मांगने गए। अनेक संस्थाओं से सहायता मांगी। अनेक जगहों से पंडितजी खाली हाथ लौटे। कई स्थानों से बहुत प्रयास करने पर दान मिल सका। कुल मिलाकर यह कि पंडितजी के अथक परिश्रम का नतीजा था काशी हिंदू विश्वविद्यालय। इस कारण उन्हें इस विश्वविद्यालय से बहुत लगाव था। वे प्राय: यहां आते और इसके स्थानों पर स्वयं घूम-घूमकर देखते कि कहीं कोई परेशानी तो नहीं है। एक बार पंडित मालवीय विश्वविद्यालय के एक छात्रावास का निरीक्षण करने गए। वहां के प्रत्येक कमरे में पंडितजी गए और छात्रों से उनकी समस्याएं पूछीं। वहीं एक कमरे में उन्होंने देखा कि छात्र ने दीवार के एक कोने में पेंसिल से कुछ हिसाब लिख रखा है। यह दृश्य देखकर मालवीय दु:खी हुए। उन्होंने छात्र को समझाया, 'देखो बेटा! मेरे मन में तुम्हारे प्रति जितना स्नेह और लगाव है, उतना ही स्नेह व लगाव विश्वविद्यालय की प्रत्येक ईंट से है। मैं तुमसे आशा करता हूँ कि भविष्य में तुम ऐसी गलती नहीं करोगे।' फिर उन्होंने जेब से रुमाल निकालकर दीवार को साफ कर दिया। विश्वविद्यालय के प्रति मालवीय की ऐसी निष्ठा देखकर छात्र स्वयं के कृत्य पर लज्जित हुआ और उसने क्षमा मांगकर भविष्य में ऐसा कभी नहीं करने का संकल्प लिया। उक्त प्रसंग आज के उन दिग्भ्रमित युवाओं के लिए सबक है, जो अपने शिक्षा संस्थानों की संपत्ति को नुकसान पहुंचाना अपना परम धर्म मानते हैं। वस्तुत: छात्रों का गैर ज़िम्मेदाराना रवैया शिक्षा संस्थान के साथ-साथ स्वयं उनकी छवि और प्रगति को हानि पहुंचाता है। अत: इससे बचना चाहिए।

प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं

जर्मनी के महानतम वैज्ञानिक एल्बर्ट आइंस्टाइन को अनेक राष्ट्र अपने यहां व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करते थे। मंशा यह रहती थी कि उनके ज्ञान और अनुभव का लाभ संबंधित राष्ट्र को भी प्राप्त हो। एक बार कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ने आइंस्टाइन को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। आइंस्टाइन ने सदा की भांति इस स्नेह निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। जब वे अमेरिका गए तो साथ में श्रीमती आइंस्टाइन भी थीं। व्याख्यान के बाद आइंस्टाइन दंपती माउंट विल्सन स्थित वेधशाला देखने गए। उस समय संसार की सबसे बड़ी दूरबीन इसी वेधशाला में रखी थी जो सौ इंच व्यास वाले लैंस की थी। इतनी विशाल दूरबीन देखकर श्रीमती आइंस्टाइन ने वेधशाला के अध्यक्ष से पूछा, 'इतनी बड़ी दूरबीन किस काम आती है?' अध्यक्ष ने कहा, 'ब्रह्मांड की रचना समझने के लिए।' तब श्रीमती आइंस्टाइन हैरानी से बोलीं, 'आश्चर्य है। मेरे पति यह काम साधारणत: एक पुराने लिफाफे के कागज़ पर करते हैं।' वास्तव में आइंस्टाइन के बर्लिन स्थित निवास के अध्ययन कक्ष में उनकी मेज पर न्यूटन का एक चित्र था और थी एक छोटी-सी दूरबीन। उनसे यदि कोई पूछता कि वे इस दूरबीन का उपयोग करते हैं, तो कहते, 'नहीं, मैं आकाश में तारे नहीं देखता। इस मकान में मुझसे पहले रहने वाला किरायेदार यह दूरबीन छोड़ गया है। मैंने महज़ एक खिलौने के तौर पर इसे यहां रखा है।' जब लोग आइंस्टाइन से उनकी प्रयोगशाला और उपकरणों के विषय में पूछते तो वे उपकरण के तौर पर फाउंटेन पैन दिखाते और प्रयोगशाला के लिए अपना मस्तिष्क थपथपाकर मुस्करा देते। नैसर्गिक प्रतिभा को संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती। वह अपने सहज ज्ञान के आधार पर ही अपनी राह खोज लेती है।

प्रेमनगर-इन्दौर। पांच दिवसीय 'मूल्य शिक्षा एवं राजयोग शिविर' के पश्चात् ब्र.कु. शशि को शील्ड देकर सम्मानित करते हुए बाल निकेतन संघ हायर सेकेण्ड्री स्कूल की प्रिंसीपल डॉ. नीलिमा अद्मने।

लोनावला। लायन्स क्लब में 'टिप्स ऑफ सक्सेस' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. नंदा, बिंदिया, अश्विनी कौर, क्लब के प्रेसिडेंट संदीप अग्रवाल, राजेश अग्रवाल तथा अन्य।

मंदसौर-म.प्र.। समर कैम्प के समापन अवसर पर पुरस्कार वितरण करते हुए भारतीय विद्या मंदिर के प्राचार्य रमेशचन्द्र चन्दे, प्राथमिक विद्यालय लदूना की प्राचार्य उमाकुंवर, समाजसेवी शकुन्तला पोरवाल तथा ब्र.कु. समिता।

मनोहर थाना-राज.। कोकिल बाबा महाराज,श्री राम कथा वाचक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा।

नवरंगपुर-ओडिशा। 77 बटैलियन बी.एस.एफ. के कमाण्डेंट एस.एच. एस.एस. मुरेथी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. अभिजीत।

रुद्रपुर। वरिष्ठ उद्योगपति एवं समाजसेवी रेमती रमन सिंघला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सूरजमुखी।